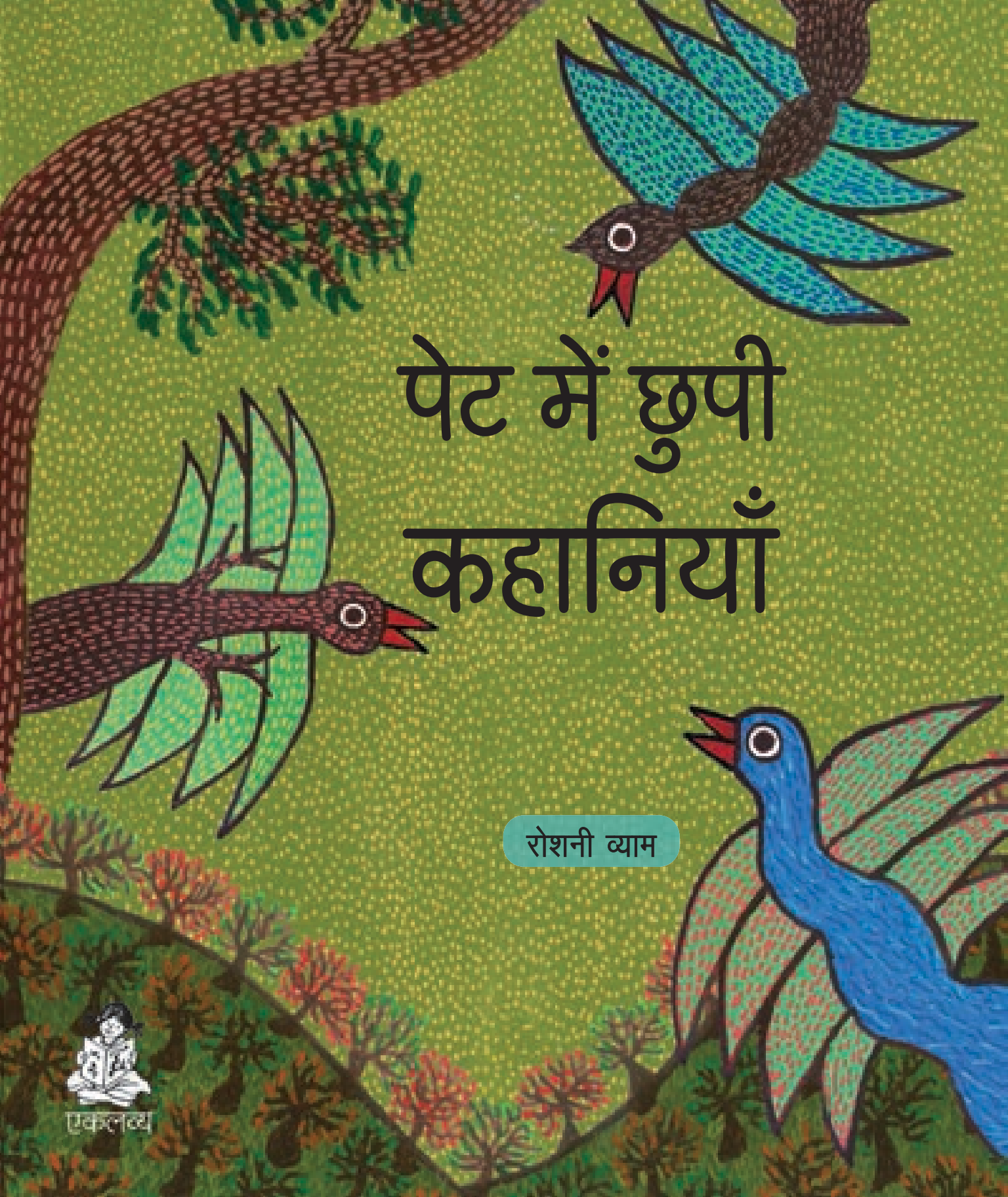
पेट में छुपी
कहानियाँ
रोशनी व्याम
एकलव्य

पेट में छुपी कहानियाँ

कहानी और चित्र
रोशनी व्याम

एकलव्य

एक समय की बात है। एक गाँव में दो दोस्त हीरू और लच्छू रहते थे। वे इतने जिगरी दोस्त थे कि सबकुछ साथ-साथ करते थे, जैसे कि खाना, नहाना, मछली पकड़ना...।
ऐसे ही रहते-रहते काफी दिन गुज़र गए।

लच्छू, बहुत दिनों से हम कहीं गए नहीं। चलो, कहीं दूर गाँव घूमने चलते हैं!
हाँ, क्यों नहीं... कल सुबह ही निकल पड़ते हैं।

अगली सुबह दोनों घोड़ों पर अपना सामान बाँधकर निकल पड़े।

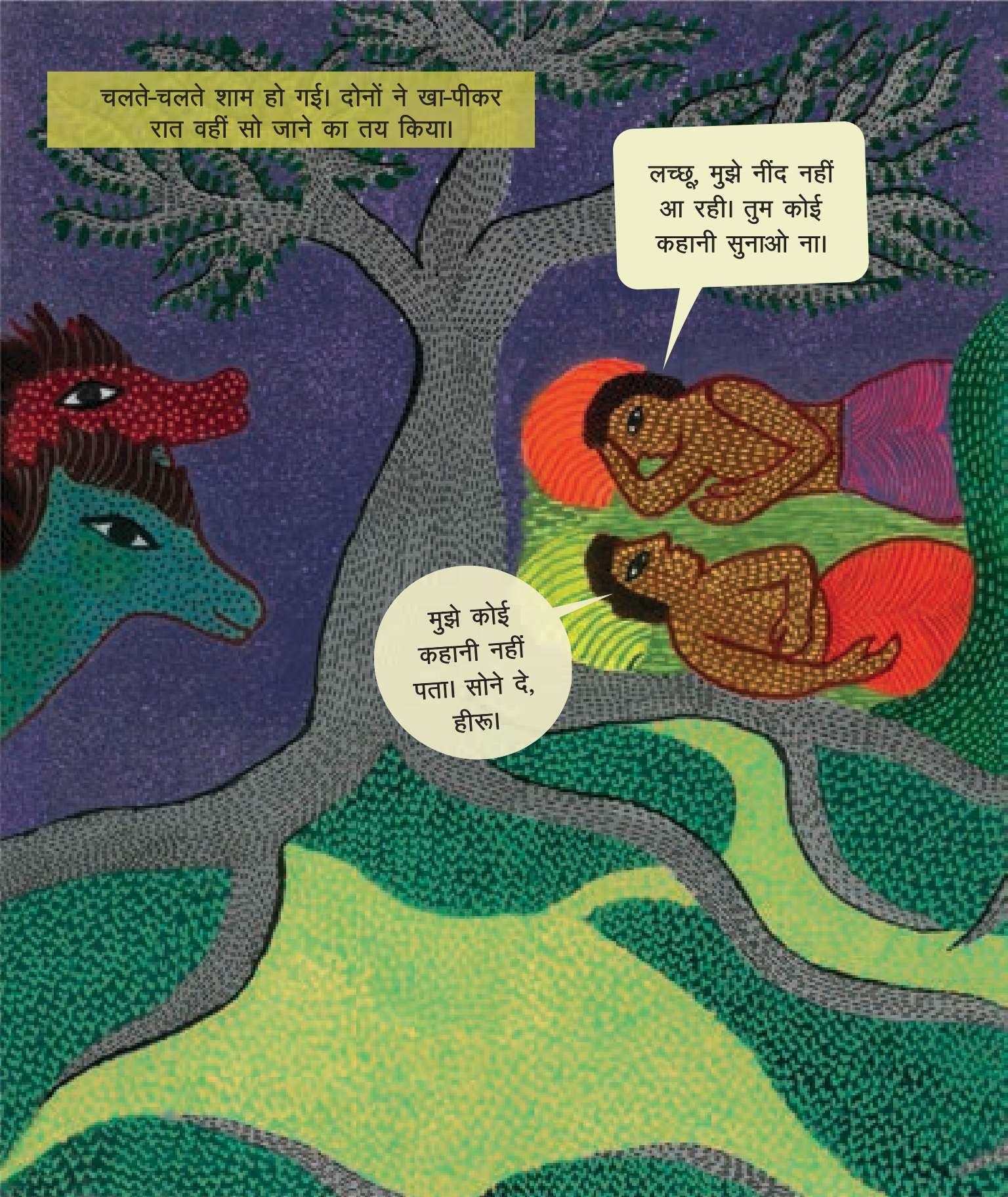
चलते-चलते शाम हो गई। दोनों ने खा-पीकर रात वहीं सो जाने का तय किया।
लच्छू, मुझे नींद नहीं आ रही। तुम कोई कहानी सुनाओ ना।
मुझे कोई कहानी नहीं पता। सोने दे, हीरू।

अरे, कोई तो कहानी पता होगी।
नहीं पता। मुझे बहुत ज़ोरों की नींद आ रही है। मुझे सोने दे और तू भी सो जा।
ऐसा कहकर लच्छू गहरी नींद में सो गया।

हम कब से इस लच्छू के भीतर हैं पर ये हमको कभी बाहर ही नहीं निकालता।
लच्छू ने हीरू से कह तो दिया कि उसके पास कोई कहानी नहीं है, पर उसके पेट के भीतर तीन-तीन कहानियाँ कुलबुला रही थीं। रात के सन्नाटे में वे तीनों आपस में बातें करने लगीं।

हम जेल के कैदी की तरह रहकर परेशान हो चुके हैं। हमें भी तो बाहर की हवा-पानी चाहिए।
हमें अब इसका काल बनकर ही बाहर निकलना होगा।

मैं बाहर निकलकर बिच्छू बनकर उसके जूते में घुस जाऊँगी और सुबह जब वह जूते पहनेगा तब मैं उसे काट लूँगी।

मैं नदी में बाढ़ बन जाऊँगी
और जब वह नदी पार करेगा
तो मैं उसे बहा ले जाऊँगी।
मैं एक बड़ा-सा
सेमल का पेड़
बनकर उसके
ऊपर गिर
जाऊँगी।

हीरू को नींद नहीं आ रही थी। उसने
तीनों कहानियों की आपसी बातें सुन लीं।

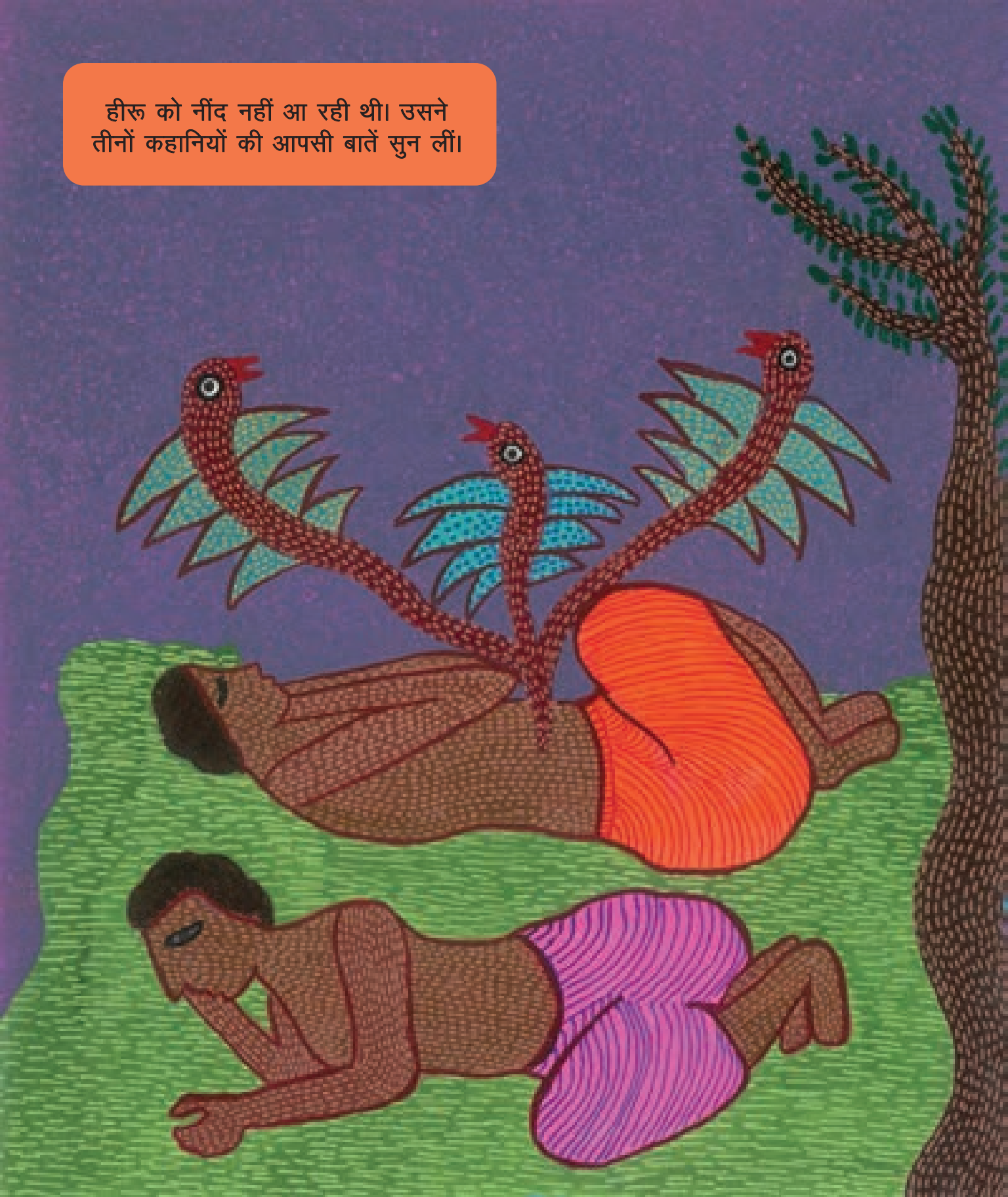

रुको लच्छू! अपने जूते पहले अच्छे से झटकार लो और फिर पहनो।
ये ऐसे क्यों बोल रहा है?
इतना बड़ा
बिच्छू!
हीरू, तुमने मेरी जान बचा ली, वरना आज तो मैं मर ही जाता।

वे आगे बढ़े। अब उन्हें एक नदी पार करनी थी।
लच्छू, मेरी बात ध्यान से सुनो! नदी पार करने के लिए अपने घोड़े को ज़ोर से भगाना और एक ही झटके में नदी पार कर जाना, और हम यह साथ में करेंगे।
ऐसा क्यों?
अरे, मैं जैसा कह रहा हूँ, तू वैसा कर।

दोनों ने जैसे ही एक बार में नदी पार की, वैसे ही नदी में बाढ़ आ गई।
जल्दी भाग लच्छू!!

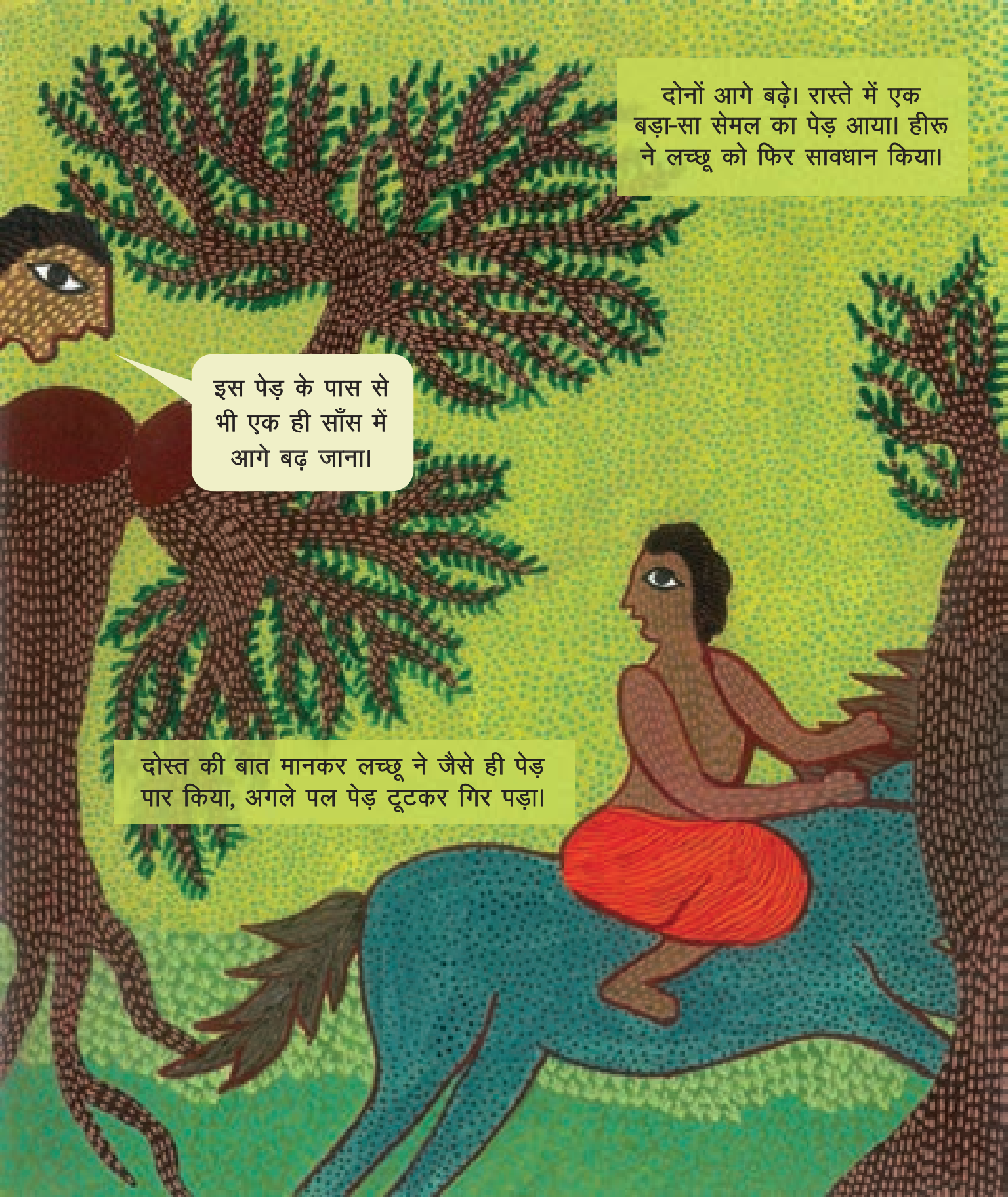
दोनों आगे बढ़े। रास्ते में एक बड़ा-सा सेमल का पेड़ आया। हीरू ने लच्छू को फिर सावधान किया।
इस पेड़ के पास से भी एक ही साँस में आगे बढ़ जाना।
दोस्त की बात मानकर लच्छू ने जैसे ही पेड़ पार किया, अगले पल पेड़ टूटकर गिर पड़ा।

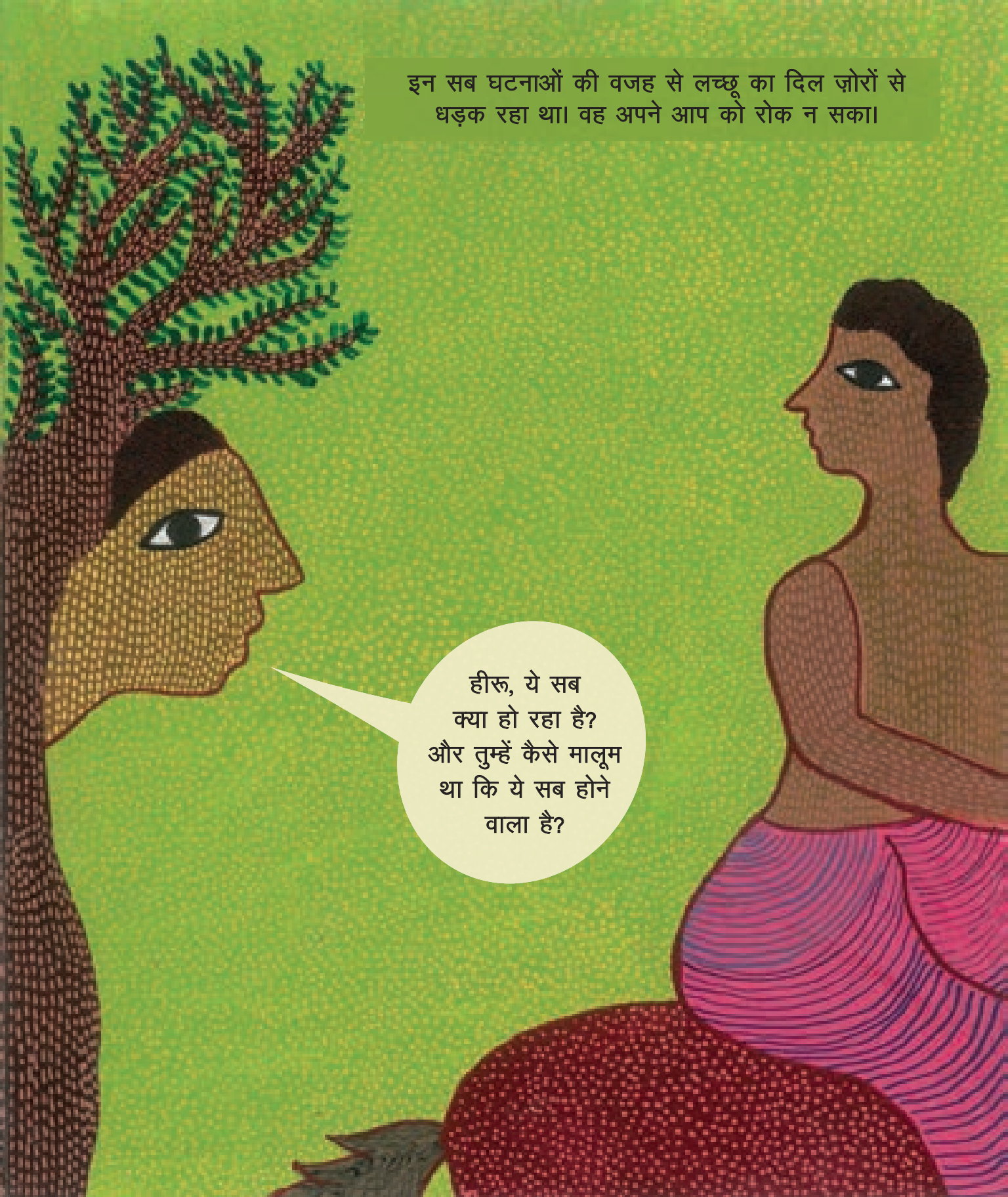
इन सब घटनाओं की वजह से लच्छू का दिल ज़ोरों से धड़क रहा था। वह अपने आप को रोक न सका।
हीरू, ये सब क्या हो रहा है? और तुम्हें कैसे मालूम था कि ये सब होने वाला है?

कल रात तो तुमने कहा था कि तुम्हारे पास सुनाने को कोई कहानी नहीं है जबकि तुम्हारे पेट में तो तीन-तीन कहानियाँ थीं। तुम्हारे सोने के बाद मैंने उनकी बातें सुन लीं। वे बाहर निकलना चाहती थीं। तुमसे नाराज़ होकर वे तुम्हारा काल बनकर निकलीं। इसलिए अगर तुम्हारे भीतर कोई कहानी हो तो उसे सुना देना चाहिए।
शुक्रिया हीरू, इतनी बढ़िया बात बताने और मेरी जान बचाने के लिए।

और यह भी एक कहानी बन गई और बाकी कहानियों में शामिल हो गई। उस दिन के बाद से कोई भी अपने पेट में कहानी छुपाकर नहीं रखता। अलग-अलग जगहों पर पीढ़ी दर पीढ़ी इन कहानियों को सुनाया जाता, और हर बार सुनाने वाला उसमें अपना कुछ जोड़ देता। इस तरह सुनते-सुनाते ये कहानियाँ दूर-दूर तक फैल गईं।

पेट में छुपी कहानियाँ
PET MEIN CHHUPI KAHANIYAN

कहानी व चित्र: रोशनी व्याम
डिज़ाइन: कनक शशि
सम्पादन: सीमा, विनता विश्वनाथन व कनक शशि

रोशनी व्याम व एकलव्य फाउंडेशन, अप्रैल 2025

यह किताब क्रिएटिव कॉमन्स के Attribution-Non-Commercial-NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) लाइसेंस के अन्तर्गत है जिसका पूरा विवरण http://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd पर उपलब्ध है।

इस किताब का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों हेतु बिना बदलाव के मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक, चित्रकार और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए प्रकाशक से अवश्य सम्पर्क करें।

पहला संस्करण: अप्रैल 2025 (3000 प्रतियाँ)
कागज़: 100 gsm मैट आर्ट व 220 gsm एफबीबी (कवर)
ISBN: 978-93-48176-43-1
मूल्य: ₹ 70.00

यह किताब *सिटे इंटरनेशनल डेस आर्ट्स,* पेरिस रेसीडेंसी के दौरान तैयार हुई।

प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72
वेबसाइट: www.eklavya.in; ईमेल: books@eklavya.in

मुद्रक: आदर्श प्रा लि, भोपाल; फोन: +91 755 255 5442

शुक्रिया

मैं उन सभी का शुक्रिया अदा करना चाहूँगी जिनके बिना यह किताब मुमकिन नहीं हो पाती।

खास तौर से, मेरी माँ दुर्गा बाई व्याम का, जिन्होंने मुझे ये खूबसूरत कहानियाँ सुनाईं।

भारतीय फ्रेंच संस्थान और पेरिस फ्रेंच संस्थान का शुक्रिया, जिन्होंने मुझे *सिटे इंटरनेशनल डेस आर्ट्स,* पेरिस में मेरे प्रोजेक्ट के लिए सहयोग किया।

एकलव्य फाउंडेशन का तहे दिल से शुक्रिया, जिन्होंने पेरिस में मेरे रेसिडेंसी कार्यक्रम के लिए आर्थिक सहयोग किया।

मेरे दोस्तों – जोएल जोलिवेट, थॉमस सिमोएस, कार्तिका नायर, शैलजा श्रीनिवासन; मेरे परिवार; और एकलव्य की पूरी टीम का खास शुक्रिया, जिन्होंने मेरे प्रोजेक्ट के दौरान मुझे पूरे दिल से सहयोग किया।

– रोशनी व्याम

रोशनी व्याम

रोशनी व्याम एक कलाकार हैं। वे परधान गोंड समुदाय से हैं। वे एक चित्रकार, लेखक, डिज़ाइनर व क्यूरेटर के रूप में विभिन्न कला क्षेत्रों में काम कर रही हैं। उनकी कला-प्रदर्शनियों का प्रदर्शन देश-विदेश दोनों जगहों पर हुआ है, जिसमें सामूहिक प्रदर्शनियों के साथ-साथ एकल प्रदर्शनियाँ भी शामिल हैं।

रोशनी ने नवयाना पब्लिकेशन, एकलव्य फाउंडेशन, तारा बुक्स, प्रथम बुक्स, वेस्टलैंड बुक्स जैसे प्रमुख भारतीय प्रकाशकों के साथ काम किया है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर, उन्होंने ज़ुल्मा, लेस बेल्स लेत्रेस, म्यूसेम, दाराजा पब्लिकेशन के साथ काम किया है।

हाल ही में, उन्होंने फ्रांस के *सिटे इंटरनेशनल डेस आर्ट्स,* पेरिस में छह महीने का कलाकार निवास कार्यक्रम पूरा किया। इसके अलावा, उन्होंने बर्लिन में स्पोर इनिशिएटिव की वॉरल प्रकल्प परियोजना के लिए 'मदर नेचर' विषय पर एक बड़ी दीवार कला पर काम किया।

फिलहाल, रोशनी 'परधान गोंड जनजाति की मूल कहानियों का पुनरुद्धार' परियोजना में शामिल हैं। इस परियोजना का मकसद परधान गोंड जनजाति की 'कहानी कहने' की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करना है। वे इस परियोजना की कुछ कहानियों के लिए एकलव्य फाउंडेशन के साथ लेखक व चित्रकार के बतौर काम कर रही हैं।

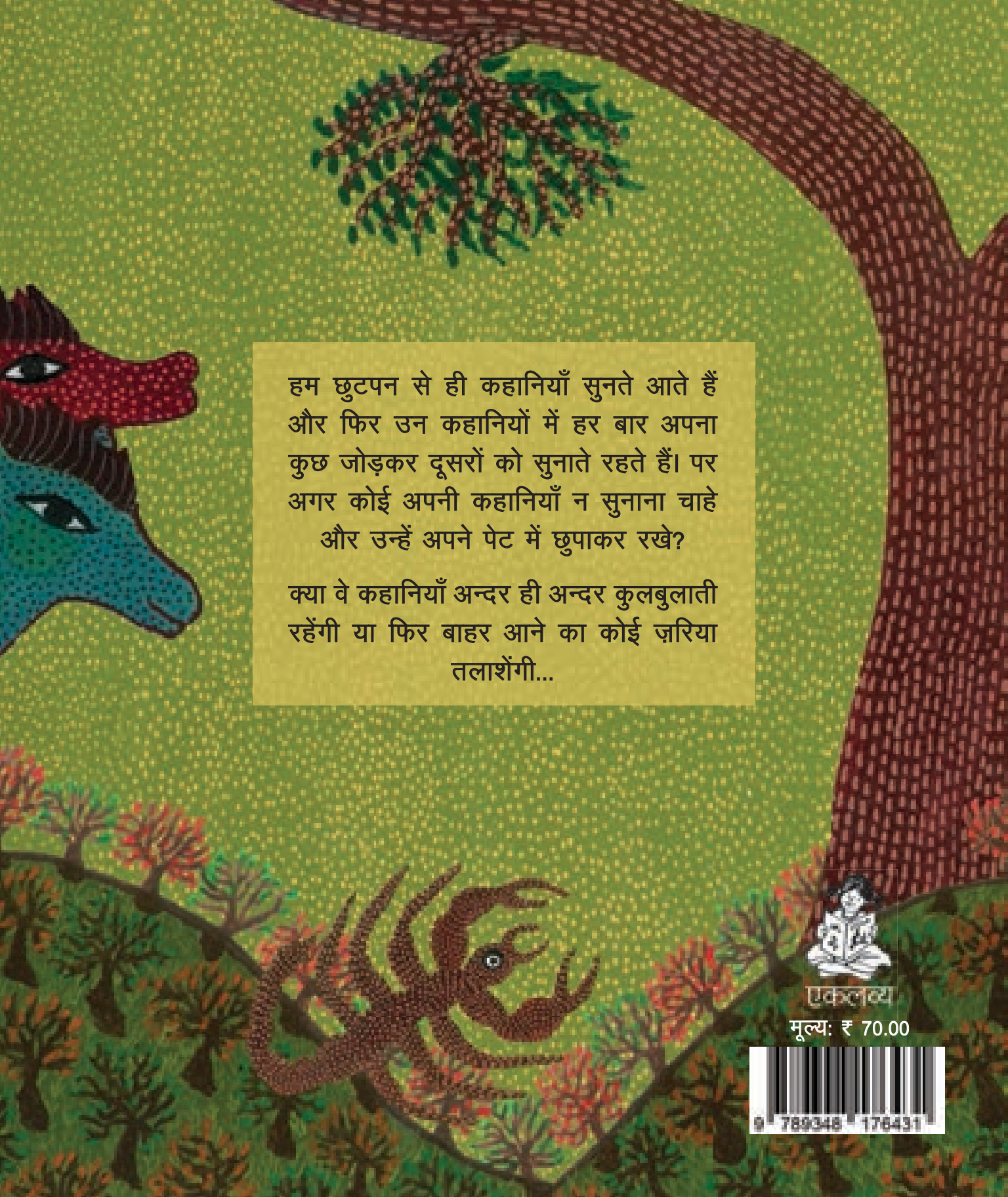

हम छुटपन से ही कहानियाँ सुनते आते हैं और फिर उन कहानियों में हर बार अपना कुछ जोड़कर दूसरों को सुनाते रहते हैं। पर अगर कोई अपनी कहानियाँ न सुनाना चाहे और उन्हें अपने पेट में छुपाकर रखे?

क्या वे कहानियाँ अन्दर ही अन्दर कुलबुलाती रहेंगी या फिर बाहर आने का कोई ज़रिया तलाशेंगी...

एकलव्य
मूल्य: ₹ 70.00
9 789348 176431